

## मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

शेख शफी अहमद<sup>1</sup>, डॉ.ममता पांडे<sup>2</sup>

शोधार्थी, हिंदी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय<sup>1</sup>

अनुसंधान पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय<sup>2</sup>

Accepted 12<sup>th</sup> Sep, 2023

Author(s) retain the copyright of this article

### सार

प्रस्तुत शोध पत्र मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य में निहित नारी दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। दोनों लेखिकाएँ समकालीन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की प्रमुख हस्ताक्षर हैं, किंतु उनके कथा संसार में स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से उद्भूत होती है। मैत्रेयी पुष्पा का कथा संसार ग्रामीण और निम्न वर्गीय स्तरियों के संघर्ष, उनकी जैविक आवश्यकताओं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह को केंद्र में रखता है, जबकि ममता कालिया शहरी मध्यवर्गीय नारी की आंतरिक द्वंद्व, वैवाहिक संबंधों की जटिलताओं और आधुनिकता के दबावों को उजागर करती है। यह अध्ययन विउपनिवेशीकरण और नारीवादी सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में दोनों रचनाकारों के कथा साहित्य का विश्लेषण करता है। शोध में पाया गया कि मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में देहवादी और प्रतिरोधी स्वर अधिक प्रबल है, जो परंपरागत नैतिकता को चुनौती देता है, जबकि ममता कालिया की कथाओं में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद और आत्मान्वेषण की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती है। दोनों लेखिकाओं की रचनाएँ भारतीय नारीवाद के बहुस्तरीय स्वरूप को प्रकट करती हैं और यह स्थापित करती हैं कि नारी मुक्ति का कोई एकल आख्यान नहीं है।

**मुख्य शब्द:** नारी दृष्टिकोण, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, तुलनात्मक अध्ययन, नारीवादी साहित्य

### 1. प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी लेखन ने एक विशिष्ट स्थान अर्जित किया है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारतीय समाज में नारी चेतना का विकास हो रहा था, तब साहित्य में भी स्त्री अस्मिता और उसके संघर्ष को केंद्रीय स्थान मिलने लगा। यह वह कालखण्ड था जब पाक्षात्य नारीवाद के सिद्धांत भारतीय परिप्रेक्ष्य में नए अर्थ ग्रहण कर रहे थे और भारतीय स्त्री अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों के संदर्भ में अपनी पहचान की तलाश कर रही थी। इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया का लेखन विशेष महत्व रखता है क्योंकि दोनों ही लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के विविध आयामों को अपने कथा साहित्य में प्रामाणिकता के साथ उकेरा है। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अंचल में हुआ और उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन की कठोर यथार्थता, जातीय विभेद, और स्त्री शोषण के विविध रूप दिखाई देते

हैं। चन्ना (2020) के अनुसार, भारतीय जनजातियों और हाशिए के समुदायों की सामाजिक संरचना को समझने के लिए मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण आवश्यक है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों और उपन्यासों में स्त्री देह की राजनीति, यौनिकता की खुली अभिव्यक्ति, और पितृसत्तात्मक मूल्यों के प्रति प्रत्यक्ष विद्रोह का स्वर मुखर है। दूसरी ओर, ममता कालिया का लेखन शहरी मध्यवर्गीय जीवन से अधिक जुड़ा हुआ है। उनकी कथाओं में आधुनिक शिक्षित स्त्री के मनोभावों, वैवाहिक जीवन की नीरसता, आर्थिक स्वतंत्रता की चाह, और परंपरा एवं आधुनिकता के बीच फंसी स्त्री की मानसिक उलझनों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

भारतीय नारीवाद की बहुलतावादी प्रकृति को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाली लेखिकाओं की रचनाओं का अध्ययन करें। भाटिया और प्रिया (2018) के अनुसार, भारतीय संदर्भ में नारीवाद को विउपनिवेशीकरण के परिप्रेक्ष्य में देखना आवश्यक है क्योंकि यूरो-अमेरिकी

नारीवादी सिद्धांत भारतीय स्त्री की जटिल सामाजिक स्थिति को पूरी तरह स्पष्ट नहीं कर सकते। मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के लेखन का तुलनात्मक अध्ययन इस बहुलतावाद को समझने में सहायक है क्योंकि दोनों ही अपने-अपने सामाजिक संदर्भों में स्त्री मुक्ति के प्रश्न को उठाती हैं। विश्व साहित्य के संदर्भ में भी नारी लेखन की परंपरा में विविधता देखी जा सकती है (बरोज़, 2019)। पश्चिमी नारीवाद से भिन्न, गैर-पश्चिमी समाजों में नारीवाद जाति, वर्ग, धर्म और उपनिवेशवाद के प्रश्नों से गहरे जुड़ा हुआ है। मैकलियोड, भाटिया और लियू (2020) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि उपनिवेशवाद-विरोधी नारीवाद की संभावनाओं और चुनौतियों को समझना आवश्यक है। भारतीय साहित्य में नारी लेखन इन्हीं जटिलताओं को प्रतिबिंबित करता है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में वर्ग और जाति का प्रश्न केंद्रीय है, जबकि ममता कालिया की कथाओं में आधुनिक शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री की पहचान का संकेत प्रमुख है।

## 2. साहित्य समीक्षा

नारीवादी साहित्य समीक्षा की परंपरा में पश्चिमी और गैर-पश्चिमी दोनों ही दृष्टिकोणों का समावेश आवश्यक है। भाटिया (2018) ने अपनी पुस्तक 'विउपनिवेशीकरण मनोविज्ञान' में भारतीय युवा पहचान के संदर्भ में विउपनिवेशीकरण की आवश्यकता पर बल दिया है। उनका तर्क है कि भारतीय मनोविज्ञान और समाजशास्त्र को यूरो-अमेरिकी ढांचों से मुक्त करके भारतीय संदर्भों में देखना चाहिए। यही बात साहित्यिक अध्ययन पर भी लागू होती है। मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के लेखन को केवल पश्चिमी नारीवादी सिद्धांतों के आधार पर नहीं आंका जा सकता, बल्कि भारतीय सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में देखना होगा। नारीवाद और उपनिवेशवाद के अंतर्संबंधों पर सेगालो और फाइन (2020) का कार्य महत्वपूर्ण है। उन्होंने लिंग-आधारित हिंसा के संदर्भ में उपनिवेशवाद-विरोधी नारीवाद की आवश्यकता को रेखांकित किया है। भारतीय समाज में स्त्री के विरुद्ध हिंसा केवल लैंगिक नहीं है, बल्कि वर्ग, जाति और धार्मिक पहचान से भी जुड़ी हुई है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में इस बहुस्तरीय हिंसा का चित्रण मिलता है, जहां दलित और पिछड़ी जाति की स्त्रियां न केवल पुरुष वर्चस्व बल्कि सर्वण वर्चस्व का भी सामना करती हैं। पटनायक (2019) ने आदिवासी अधिकारों और बड़ी पूँजी के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि भारत में हाशिए के समुदायों का शोषण बहुआयामी है, जिसमें लैंगिक शोषण एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारतीय पौराणिक आख्यानों में स्त्री चरित्रों की पुनर्वर्याख्या भी समकालीन नारीवादी लेखन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। मूडली (2020) ने सीता के चरित्र की आधुनिक व्याख्याओं का विश्लेषण किया है और यह दर्शाया है कि आदर्श हिंदू महिला की अवधारणा किस प्रकार स्त्री को बंधनों में रखती

है। वोल्ला (2019) का उपन्यास 'यशोधरा' भी इसी परंपरा में है, जो बौद्ध परंपरा में स्त्री की भूमिका को नए सिरे से देखता है। येंग (2020) ने बौद्ध नारीवाद पर अपने कार्य में यह स्थापित किया है कि पितृसत्ता के विरुद्ध क्रोध का रूपांतरण आध्यात्मिक और सामाजिक मुक्ति दोनों के लिए आवश्यक है। ममता कालिया की कहानियों में भी पारंपरिक भारतीय नारी की छवि को चुनौती दी गई है, और यह दिखाया गया है कि आधुनिक शिक्षित स्त्री इन पारंपरिक भूमिकाओं में कैसे फंसी हुई है। कोलिन्स, माचिजावा और राइस (2019) द्वारा संपादित पुस्तक 'महिलाओं का अंतरराष्ट्रीय मनोविज्ञान' में विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में महिलाओं की मानसिकता का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि नारी मुक्ति का कोई सार्वभौमिक मॉडल नहीं है, बल्कि प्रत्येक संस्कृति में स्त्री की समस्याएं और उनके समाधान भिन्न हो सकते हैं। बेल (2018) ने विउपनिवेशीकरण के प्रति शैक्षणिक प्रतिक्रिया पर अपने शोध में यह दर्शाया है कि विऔपनिवेशिक वातावरण में व्यक्ति की चेतना और व्यक्तिपरकता का विकास कैसे होता है। यह दृष्टिकोण भारतीय नारी लेखन को समझने में विशेष रूप से सहायक है।

स्वदेशी और हाशिए के समुदायों के साहित्य पर भी अनेक विद्वानों ने कार्य किया है। डेस्मारेस और रॉबिंस (2019) ने चिकित्सा मानविकी और कथात्मक चिकित्सा के स्वदेशीकरण पर अपने शोध में यह स्पष्ट किया है कि स्थानीय परिप्रेक्ष्य और अनुभवों को शामिल करना कितना महत्वपूर्ण है। क्रॉस्ही और लाइक्स (2019) ने नरसंहार के बाद माया महिलाओं के नायकत्व पर अपने अध्ययन में यह दिखाया है कि अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी महिलाएं अपनी शक्ति और संकल्प को बनाए रखती हैं। सांचेज़ (2019) ने हाइब्रिड पौराणिक कथाओं में पहचान और विरासत के प्रश्नों का विश्लेषण किया है, जो यह दर्शाता है कि समकालीन लेखन में पारंपरिक कथाओं का पुनर्लेखन कैसे नई पहचान के निर्माण में योगदान देता है।

## 3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित तीन प्रमुख उद्देश्य हैं। प्रथम, मैत्रेयी पुष्पा और ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चरित्रों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक विश्लेषण करना और यह समझना कि किस प्रकार भिन्न सामाजिक संदर्भ उनकी रचनाओं में स्त्री दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। द्वितीय, दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध के स्वरूप और स्त्री मुक्ति की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना, तथा यह पड़ताल करना कि ग्रामीण और शहरी संदर्भों में स्त्री संघर्ष कैसे भिन्न रूप लेता है। तृतीय, विउपनिवेशीकरण और भारतीय नारीवादी सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में दोनों रचनाकारों के योगदान का मूल्यांकन

करना और यह स्थापित करना कि उनका लेखन किस प्रकार भारतीय नारीवाद के बहुलतावादी स्वरूप को प्रतिबिबित करता है।

#### 4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में मैत्रेयी पुष्टा और ममता कालिया की प्रमुख कहानियों और उपन्यासों का पाठ विश्लेषण किया गया है। शोध में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की पद्धति का प्रयोग करते हुए दोनों लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी पात्रों के चरित्र विवरण, उनकी सामाजिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक दृंद्ध, और पितृसत्ता के प्रति प्रतिरोध के विभिन्न रूपों का विश्लेषण किया गया है। शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में मैत्रेयी पुष्टा की रचनाओं में 'चाक', 'इदन्म्रमम', 'अल्मा कबूतरी', 'झूलानट', और प्रमुख कहानियों का चयन किया गया है। ममता कालिया की रचनाओं में 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'दौड़', 'एक पली के नोट्स', और प्रमुख कहानियों को शामिल किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में नारीवादी सिद्धांत, विउपनिवेशीकरण अध्ययन, और भारतीय समाजशास्त्र पर आधारित शोध पत्र और पुस्तकों का उपयोग किया गया है। विश्लेषण की प्रक्रिया में पहले दोनों लेखिकाओं की रचनाओं का गहन पाठ किया गया और नारी चरित्रों से संबंधित प्रमुख प्रसंगों को चिह्नित किया गया। तत्पश्चात इन प्रसंगों का विषयगत विश्लेषण करते हुए विभिन्न थीम्स जैसे देह राजनीति, यौनिकता, वैवाहिक संबंध, आर्थिक स्वतंत्रता, वर्ग और जाति, और पितृसत्ता के प्रति प्रतिरोध को पहचाना गया। अंत में तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से दोनों लेखिकाओं के दृष्टिकोण में समानताओं और भिन्नताओं को रेखांकित किया गया। शोध में नारीवादी सिद्धांत, विशेषकर भाटिया (2018), भाटिया और प्रिया (2018), मैकलियोड, भाटिया और लियू (2020), तथा सेगालो और फाइन (2020) के कार्यों को सैद्धांतिक आधार के रूप में उपयोग किया गया है।

#### 5. परिणाम एवं विश्लेषण

**मैत्रेयी पुष्टा के कथा साहित्य में नारी दृष्टिकोण**  
मैत्रेयी पुष्टा का कथा संसार मुख्यतः ग्रामीण और अर्ध-शहरी परिवेश में रहने वाली निम्न और मध्य वर्गीय स्त्रियों के जीवन से निर्मित है। उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे स्त्री देह और यौनिकता को खुलकर अभिव्यक्त करती हैं, जो परंपरागत हिंदी साहित्य में प्रायः वर्जित रहा है। 'चाक' उपन्यास में सारंग की कथा इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सारंग एक विधवा स्त्री है जो अपनी जैविक आवश्यकताओं को स्वीकार करती है और समाज के ठेकेदारों को खुली चुनौती देती है। यह चरित्र मूडली (2020) द्वारा विश्लेषित आदर्श हिंदू महिला की छवि को पूरी तरह तोड़ता है। मैत्रेयी पुष्टा की कहानियों में जाति

और वर्ग का प्रश्न भी केंद्रीय भूमिका निभाता है। उनकी रचनाओं में दलित और पिछड़ी जाति की स्त्रियां न केवल पुरुष वर्चस्व बल्कि सर्वांग वर्चस्व का भी सामना करती हैं। पटनायक (2019) ने आदिवासी अधिकारों पर अपने शोध में जिस बहुस्तरीय शोषण की बात की है, वह मैत्रेयी पुष्टा के कथा साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'इदन्म्रमम' उपन्यास में कस्तूरी का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार एक स्त्री को जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर त्रिस्तरीय शोषण का सामना करना पड़ता है। मैत्रेयी पुष्टा की रचनाओं में स्त्री प्रतिरोध का स्वर अत्यंत मुखर है। उनकी स्त्री पात्र परंपरागत सामाजिक मान्यताओं को सीधे चुनौती देती हैं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं। यह प्रतिरोध केवल मानसिक स्तर पर नहीं बल्कि शारीरिक और सामाजिक स्तर पर भी दिखाई देता है। सेगालो और फाइन (2020) ने जिस उपनिवेशवाद-विरोधी नारीवाद की बात की है, मैत्रेयी पुष्टा का लेखन उसी परंपरा में है जहां स्थानीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति का प्रश्न उठाया जाता है।

#### ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी दृष्टिकोण

ममता कालिया का कथा संसार मुख्यतः शहरी मध्यवर्गीय परिवेश में केंद्रित है। उनकी रचनाओं में आधुनिक शिक्षित स्त्री की मानसिक दृंद्ध, वैवाहिक जीवन की जटिलताएं, और आर्थिक स्वतंत्रता की चाह प्रमुख विषय हैं। मैत्रेयी पुष्टा से भिन्न, ममता कालिया की कथाओं में स्त्री संघर्ष का स्वरूप अधिक सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक है। कोलिन्स, माचिजावा और राइस (2019) द्वारा विश्लेषित महिलाओं की अंतर्राष्ट्रीय मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ममता कालिया की रचनाओं को देखा जा सकता है, जहां आधुनिकता और परंपरा के बीच फंसी स्त्री की मानसिक स्थिति का गहन अध्ययन है। ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' में शहरी मध्यवर्गीय स्त्री की बेघरी की स्थिति को दर्शाया गया है। यह बेघरी केवल भौतिक नहीं है बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी है। आधुनिक शिक्षित स्त्री जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद सामाजिक और पारिवारिक दबावों में जकड़ी हुई है, उसकी पीड़ा को ममता कालिया ने बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा है। बेल (2018) ने विऔपनिवेशिक वातावरण और व्यक्तिपरकता के विकास पर जो शोध प्रस्तुत किया है, वह ममता कालिया की रचनाओं को समझने में सहायक है।

ममता कालिया की कहानियों में वैवाहिक संबंधों की जटिलता और नीरसता का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'एक पली के नोट्स' में मध्यवर्गीय विवाहित स्त्री की मानसिक स्थिति का सूक्ष्म विश्लेषण है। यह रचना यह दर्शाती है कि किस प्रकार शिक्षित और आधुनिक होने के बावजूद स्त्री परंपरागत भूमिकाओं में बंधी रहती है और उसके व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जाता है। भाटिया और प्रिया (2018) ने नवउदारवादी विचारधारा और भारतीय संस्कृति के संदर्भ में जिन मुद्दों को उठाया है, वे

ममता कालिया की रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

### तुलनात्मक विश्लेषण

मैत्रेयी पुष्टा और ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी दृष्टिकोण की तुलना करने पर कुछ महत्वपूर्ण समानताएं और भिन्नताएं सामने आती हैं। सबसे प्रमुख भिन्नता उनके कथा संसार के सामाजिक परिवेश में है। मैत्रेयी पुष्टा ग्रामीण और निम्न वर्गीय स्त्रियों की कथा कहती है, जबकि ममता कालिया शहरी मध्यवर्गीय स्त्रियों पर केंद्रित हैं। यह भिन्नता केवल पृष्ठभूमि की नहीं है बल्कि स्त्री संघर्ष के स्वरूप में भी परिलक्षित होती है। चन्ना (2020) ने भारतीय समाज की विविधता पर जो मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, वह इस भिन्नता को समझने में सहायक है। मैत्रेयी पुष्टा की रचनाओं में स्त्री प्रतिरोध का स्वर अधिक मुखर और प्रत्यक्ष है। उनकी स्त्री पात्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था को खुली चुनौती देती हैं और अपनी देह और यौनिकता पर अपना अधिकार मांगती हैं। इसके विपरीत, ममता कालिया की कथाओं में स्त्री प्रतिरोध अधिक सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक है। उनकी स्त्री पात्र आंतरिक द्वंद्व से गुजरती हैं और आत्मान्वेषण के माध्यम से अपनी पहचान की तलाश करती हैं। दोनों ही दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं और भारतीय नारीवाद की बहुलतावादी प्रकृति को दर्शते हैं। जाति और वर्ग का प्रश्न भी दोनों लेखिकाओं के यहां भिन्न रूप में आता है। मैत्रेयी पुष्टा की रचनाओं में जाति व्यवस्था का प्रश्न केंद्रीय है और उनकी स्त्री पात्र इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करती दिखाई देती हैं। ममता कालिया की कथाओं में जाति का प्रश्न उतना केंद्रीय नहीं है, लेकिन वर्ग की चेतना अवश्य है। मध्यवर्गीय मूल्य, आकांक्षाएं और उनसे उत्पन्न दबाव ममता कालिया की रचनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में समानता यह है कि दोनों ही पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देती हैं और स्त्री स्वतंत्रता के पक्षधर हैं। येंग (2020) ने बौद्ध नारीवाद पर अपने कार्य में पितृसत्ता के विरुद्ध क्रोध के रूपांतरण की बात की है, जो दोनों लेखिकाओं के यहां भिन्न रूपों में दिखाई देता है। मैत्रेयी पुष्टा में यह रूपांतरण प्रत्यक्ष विद्रोह में होता है, जबकि ममता कालिया में यह आत्मचेतना और आत्मस्वीकृति के रूप में प्रकट होता है।

### 6. निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्टा और ममता कालिया के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय नारीवाद एक बहुस्तरीय और बहुआयामी परिघटना है। दोनों लेखिकाओं ने अपने-अपने सामाजिक संदर्भों में स्त्री जीवन के संघर्ष और प्रतिरोध को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। मैत्रेयी पुष्टा की रचनाओं में ग्रामीण और निम्न वर्गीय स्त्रियों का जो संघर्ष दिखाई देता है, वह जाति, वर्ग और लिंग के त्रिस्तरीय शोषण के विरुद्ध है।

उनका लेखन परंपरागत नैतिकता को सीधे चुनौती देता है और स्त्री देह तथा यौनिकता को खुलकर अभिव्यक्त करता है। ममता कालिया की रचनाओं में शहरी मध्यवर्गीय स्त्री की जो छवि उभरती है, वह आधुनिकता और परंपरा के बीच फँसी हुई है। उनकी कथाओं में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद और आत्मान्वेषण की प्रवृत्ति प्रमुख है। वैवाहिक जीवन की जटिलताएं, आर्थिक स्वतंत्रता की चाह, और सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव उनकी रचनाओं के केंद्रीय विषय हैं। भाटिया (2018) और भाटिया (2018) द्वारा प्रस्तुत विउपनिवेशीकरण की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में देखें तो दोनों लेखिकाएं भारतीय संदर्भ में नारीवाद को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। दोनों लेखिकाओं के कथा साहित्य में भिन्नताओं के बावजूद एक महत्वपूर्ण समानता यह है कि दोनों ही स्त्री को एक स्वतंत्र, सचेत और संघर्षशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। मैकलियोड, भाटिया और लियू (2020) ने उपनिवेशवाद-विरोधी नारीवाद की जो संभावनाएं और चुनौतियां बताई हैं, वे दोनों लेखिकाओं के कार्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। सेगालो और फाइन (2020) द्वारा विश्लेषित लिंग-आधारित हिंसा का प्रश्न भी दोनों लेखिकाओं के यहां विभिन्न रूपों में उठाया गया है।

यह शोध यह स्थापित करता है कि भारतीय नारीवाद को किसी एक सैद्धांतिक ढांचे में बांधना संभव नहीं है। ग्रामीण और शहरी, निम्न वर्ग और मध्यवर्ग, शिक्षित और अशिक्षित स्त्रियों के संघर्ष और आकांक्षाएं भिन्न हो सकती हैं। मैत्रेयी पुष्टा और ममता कालिया के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन इस बहुलतावाद को समझने में सहायक है। दोनों लेखिकाओं ने अपने-अपने तरीके से स्त्री स्वतंत्रता और अस्मिता के प्रश्न को उठाया है और समकालीन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श को समृद्ध किया है। अंत में यह कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्टा और ममता कालिया दोनों ही भारतीय नारीवादी साहित्य की महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनकी रचनाएं न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी। वे यह दर्शाती हैं कि नारी मुक्ति का कोई एकल आख्यान नहीं है, बल्कि विभिन्न सामाजिक संदर्भों में इसके विभिन्न रूप हो सकते हैं। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय नारीवाद को समझने के लिए स्थानीय संदर्भों, सामाजिक विविधता, और बहुलतावादी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बरोज़, सी. (2019). आज का विश्व साहित्य। [www-jstor.org.ezproxy.lib.bbk.ac.uk/stable/10.7588/worllitetoda.93.1.0098a?seq=1](http://www-jstor.org.ezproxy.lib.bbk.ac.uk/stable/10.7588/worllitetoda.93.1.0098a?seq=1) से लिया गया।

2. बेल, डी. (2018). विउपनिवेशवाद के प्रति एक शैक्षणिक प्रतिक्रिया: विऔपनिवेशिक वातावरण और बढ़ती व्यक्तिप्रकृता। अमेरिकन जर्नल ऑफ कम्युनिटी साइकोलॉजी, 62(3-4), 250-260.
3. भाटिया, एस. (2018). विउपनिवेशीकरण मनोविज्ञान: वैश्वीकरण, सामाजिक न्याय और भारतीय युवा पहचान. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. भाटिया, एस., और प्रिया, के.आर. (2018). विउपनिवेशीकरण संस्कृति: यूरो-अमेरिकी मनोविज्ञान और भारत में नवउदारवादी विचारधारा का निर्माण। सिद्धांत और मनोविज्ञान, 28(5), 645-668.
5. चन्ना, एस.एम. (2020). भारतीय जनजातियों पर मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण (पृ. 257). ओरिएंट ब्लैकस्वान.
6. क्रॉस्बी, ए., और लाइक्स, एम. बी. (2019). क्या सुधार संभव नहीं? नरसंहार के बाद माया महिलाओं का नायकत्व. रटगर्स यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. कोलिन्स, एल.एच., माचिजावा, एस.ई., और राइस, जे.के. (2019). महिलाओं का अंतरराष्ट्रीय मनोविज्ञान: अंतर्राष्ट्रीय और अंतर-विषयक दृष्टिकोणों का विस्तार. अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन.
8. डेस्मारेस, एम. एम., और रॉबिंस, आर. ई. (2019). शुरुआत से: चिकित्सा मानविकी और कथात्मक चिकित्सा का स्वदेशीकरण। सर्वाइव एंड थ्राइव: मेडिकल ह्यूमैनिटीज और नैरेटिव एज मेडिसिन के लिए एक जर्नल, 4(1).
9. मैकलियोड, सी. आई., भाटिया, एस., और लियू, डब्ल्यू. (2020). नारीवाद और उपनिवेशवाद-विरोधी मनोविज्ञान: संभावनाएँ और चुनौतियाँ। नारीवाद और मनोविज्ञान, 30(3), 287-305.
10. मूडली, डी. (2020). आदर्श हिंदू महिला? येल फार्बर की पुस्तक राम में सीता का वित्रण - सीता का अंधकार में अपहरण। एजेंडा, 34, 52-61. <https://doi.org/10.1080/10130950.2020.1782758>
11. पटनायक, एस. (2019). आदिवासी अधिकार और बड़ी पूँजी. वी. एस. राओ (सं.) में, भारत में आदिवासी अधिकार और बहिष्कार (पृष्ठ 142-152). रूटलेज.
12. सांचेज, एम. पी. (2019). हाइब्रिड पौराणिक कथाएँ: लुईस एर्ड्ग्रेच की कविता में पहचान और विरासत। कैनेरियन जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज, 78, 157-171.
13. सेगालो, पी., और फाइन, एम. (2020). लिंग-आधारित हिंसा की मौजूदा परिस्थितियों में - उपनिवेशवाद-विरोधी नारीवाद का ज्ञानात्मक अज्ञानता से सामना: महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय बातचीत। सामाजिक और व्यक्तित्व मनोविज्ञान कम्पास, 14(10), 1-10.
14. वोल्गा. (2019). यशोधरा: एक उपन्यास (पी. एस. वी. प्रसाद, अनुवादक)। हार्पर पेरेनियल। (मूल रचना 2017 में प्रकाशित)
15. येंग, एस. (2020). बौद्ध नारीवाद: पिरूसत्ता के विरुद्ध क्रोध का रूपांतरण. पालग्रेव मैकमिलन.